International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 16-06-2021, Accepted: 02-07-2021, Published: 16-07-2021
Volume 6, Issue 3, 2021, Page No. 13-14

भारतीस्वयंवरम् के समाज का आदर्श युवा

डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
साहित्य समाज का दर्पण है प्रत्येक रचनाकार के साहित्य में सामाजिक जीवन की प्रतिच्छाया परिलक्षित होती है एवं उनके साहित्य से समाज को प्रेरणा भी मिलती है। साहित्य समाज की कदापि उपेक्षा नहीं कर सकता।पं.सुधाकर। शुक्ल रचित भारती स्वयंवरम् महाकाव्य बारह सर्पों कि समाजवादी, राष्ट्र वादी, प्रगतिशील एवं सैद्धांतिक मान्यताओं का अपूर्व उन्मेष है। भारती स्वयंवरम् महाकाव्य समाज के समय वर्ग के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत है। युवा वर्ग के गुण अवगुणों को एक पर्यवेक्षक की भांति वर्णित किया है और यही इस शोध पत्र का मूल आधार है,इसी का संक्षेप में वर्णन किया जाएगा।

मूल शब्दः समाज, संवेदनशीलता, भारती, उदय, संकल्प, युवा, इष्टदेवी।

प्रस्तावना
वास्तव में मनुष्य का जीवन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ही सार्थक है, वह समाज में ही जन्मता, बढ़ता, विकसित एवं मृत्यु को प्राप्त करता है। हम कह सकते हैं कि समाज एक उद्देश्यपूर्ण समूह होता है, जो किसी एक क्षेत्र में बनता है, उसके सदस्य एकत्व एवं अपनत्व में बंधे होते हैं। समाज मनुष्य समूह का नाम ही नहीं वरन् समूह के मनुष्यों के मध्य जो परस्पर मानसिक, सामाजिक आदि सम्बन्ध स्थापित होते हैं– उनके जाल को ही समाज कहते हैं– इन्हें न हम देख सकते हैं और न ही छू सकते हैं, हम केवल इनका अनुभव कर सकते हैं।

भारतीस्वयंवरम् के समाज का आदर्श युवा
श्री सुधाकर जी के भारतीस्वयंवरम् में महाकाव्य में समतावादी समाज के स्वरूप को रेखांकित किया है।
समाज की परिभाषा करते हुए श्री शुक्ल जी कहते हैं कि भोजन–वस्त्र, सुख–दुःख, जन–निर्जन, धन–निर्धन में समानभाव से जहॉ जीवन निर्वाह होता है वही समाज है–

'असने–वसने सुख–दुःखे जने–विजने च।
धने–निधने समजातीति समाजः।।[1]

कवि समतावादी समाज को आदर्श मानकर अपने विचार व्यक्त करते हैं कि भूतल पर किसी भी प्रकार का भेदभाव, अवनति, असमानता न हो, जीवकोपार्जन का आधार श्रम हो और मानव प्रवृत्ति कल्याणरत हो–

'न कस्यद्भेदः स्यान्नृषु न भुवि कस्याप्यवनतिः
न हानेर्लाभस्याप्यसमवितरः स्यात्प्रकृतिषु।श्रमस्यैवाचासे भवतु न तु भरोप्यथभुवः
प्रवृतिः कल्याणे न धन परिहाणे च मनसाम्।।[2]

समतावादी समाज के साथ ही साथ सर्वोदय भावना से परिपूर्ण समाज के प्रति अपनी निष्ठा भारतीय–स्वयंवर में दिखाई देती है। जनता स्वच्छन्द रहे, राज्य–राजा न हो। कारागारों का अस्तित्व न हो, हर मनुष्य निर्बाध गति से प्रगति करता रहे–

'न राज्यं नो राजा भुवि तु विहरन्तु प्रकृतयः
स्वतंत्रान्तर्धारा वहतु तथाकारा ननु नृणाम्।
मनोवृत्तिङ्कोऽपि क्वचिदपि न कस्याप्यति सरेत्
प्रशस्तः पन्थास्यात्सततमखिलस्यापि प्रगतेः।।[3]

वहीं समाज में संग्रह की प्रवृत्ति विनाशकारी है, आवश्यक्ता से अधिक दान करो, त्यागी बनो। मिल बांटकर उपयोग करना चाहिए, वही अन्न प्राणप्रद है, जीवनदान देने वाला है जो सहभाजन किया गया हो–

'निज प्रयोजनावशिष्ट–भोजनाधिकञ्चयत्
ददस्व तद् ददस्वतद् ददस्वतद् अदः स्वकम्।
प्रयुज्यते वियुज्य यज्ज्वराय तत्तदेनसे
विभज्य मुज्जते हि यस्तदेव जीवनप्रदम्'।।[4]

भारतीस्वयम्वरम् की नायक–नायिका भारतीय समाज को विपन्नावस्था से मुक्ति दिलाने का संकल्प भारत में वर्तमान सामाजिक विषमता और असंतुलन के प्रति कवि की संवेदनशीलता को प्रकट करता है। नायिका भारती की प्रतिज्ञा है कि जब तक हर भारतीय शय्या, वस्त्र व भोजन न प्राप्त कर लेगा तब तक वह पत्थर की शिला पर शयन, वल्कल वस्त्र धारण एंव फलाहार करेगी–

'नु यावदेकोऽपि जनो धराशयो नु यावदेको जनो दिगम्बरः
नु यावदेकोऽपि जनो निरन्नमुक्त शयः शिलायां मम वल्कलैः फलः'।।[5]

इसी प्रकार नायिका भारती के सादृश्य नायक उदय भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए दृढ़ संकल्प लेता है और एकमात्र जाति भारतीय है ऐसा उद्घोष करता है–

'धर्मेण योऽहं खलु भारतीयोः यः कर्मणाऽपि प्रिय भारतीयः।
चित्तेन वित्तेन च भारतीयो जात्यापि भूयो भुवि भारतीयः'।।[6]

समाज में भारतीय जाति के रूप में, भूमण्डल में भी स्थापित करने की कल्पना कवि की निश्चित रूप से वर्तमान में विभाजित समाज को देखकर की गई होगी। भारतीय जाति के साथ–साथ कवि नायक उदय से उसकी कुल इष्ट देवी की घोषणा कराते हुए कहते हैं कि– एकमात्र कुल इष्ट देवी भारतवर्ष की एकता को स्वदेश की उन्नति के लिए भजता हूँ–

' आमेकतामेक कुलेष्टदेवीं भूत्यर्भजेऽहं भुवि भारतस्य'।।[7]

जातिवाद, वर्गवाद, सम्प्रदायवाद, राष्ट्र–विरोधी, मानवता–विरोधी, गतिविधियों आदि से आज सम्पूर्ण समाज, देश ग्रसित है, इन ज्वलन्त सामाजिक–राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए आज समाज के युवा वर्ग को दृढ़ संकल्प लेना होगा। भारतीस्वयंवरम् महाकाव्य की नायिका सर्वसुख स्वयं त्याग चुकी है और वह एसे वर का वरण करेगी जो देशभक्त हो निःस्वार्थ भाव से बिना किसी चिन्ता के राष्ट्र रक्षा के लिए उद्यत होकर शीश अर्पण कर सके। नायिका भारती के द्वारा वर की योग्यता के लिए जो गुण गिनाए गए हैं वे वास्तव में हर भारतीय में होने चाहिए। एक–एक व्यक्ति के सबल गुण ही सबल व सुदृढ़ समाज बना सकेगा। भारतीस्वयंवरम् में योग्य वर के रूप में भारतीय युवा को कवि देखना चाहता है उस युवा में विशेषतः ऐसे गुण समाहित हो वह आशावादी हो, सबल होने पर भी जो निर्बल को जिसने कभी न सताया हो, न्यायमार्ग पर सदैव चलने वाला हो। वह भारतीय युवा पीड़ितों का रक्षक एवं अपनी भूमि का अभिमान ही जिसका धन हो–

'यो जन्मभूमे र्विभवाय जात स्त्रातस्तथा येन सदार्तचित्तः।
वितञ्च यस्य स्वभुवोऽभिमानं तस्याद्यमानं सुगियड्.करोतु'।।[8]
वह व्यक्ति भूखा हो पर जिसने अनैतिक धन न स्वीकारा हो।[9]

कवि भारतीय समाज में एसे व्यक्तित्व एसे युवा चाहते हैं जिस प्रकार का वर नायिका चाहती है। वर के रूप में गुणों की गणना, विषेषताएँ भारतीस्वयंवरम् में बताई गई हैं वे निश्चित रूप से समाज व राष्ट्रीय एकता के लिए महत्वपूर्ण ही नहीं आवश्यक हैं। भारतीस्वयंवरम् में और भी लिखा है कि वह कुशल व्यक्ति जो राष्ट्र के लिए सोता, जागता एवं समस्त क्रियाएँ करता है।[10] जो व्यक्ति जाति, वाणी, बुद्धि से भारतीय हो एसे मानवमात्र के मान को बढ़ाने वाले समग्र गुणों से युक्त, समस्त पापपूर्ण दोषों से मुक्त जो व्यक्ति होगा वही नायिका भारती का वर होगा–

'सर्वोपरिष्यद् गदितै र्गुणाधै रूदघोषितै र्मानव मानवद्भिः।
युक्तस्तु मुक्तो दुरितैश्च दोषैर्यस्यान्नु तस्यास्मि विशेष वश्या'।।[11]

उपर्युक्त संकल्पनात्मक कसौटी पर खरा वही युवक उतर सकता है जो मनसा–वाचा–कर्मणा मानवीय संवेदनाओं एवं गुणों से सम्पन्न होकर पूर्णतः भारतीय हो। आज के विखण्डित होते हुए समाज में इन गुणों से सम्पन्न युवकों की ही आवष्यक्ता है तभी सामाजिक जीवन में सुख शान्ति आ सकती है।
इसी प्रकार युवती नायिका भारती के माध्यम से श्री सुधाकर जी ने अवरणीय युवकों के दुर्गुणों को भी सार्वजनिक किया है। दुर्गुणों की घोषणा भारतीस्वयंवरम् में इस प्रकार की गई है कि युवक आलस्य के वशीभूत, नपुंसक, अत्यन्त दीर्घसूत्री, मिथ्या विलासी[12] मातृभूमि के हितों को बेचने वाला[13] प्रान्तीयता, क्षेत्रीयता की विभक्त भावना से मूर्च्छित तथा क्षुद्र विचारवाला, विचारहीन, मूर्ख, दुर्बुद्धी जो केवल स्वर्गप्राप्ति के लिए पञ्चमाङ्गी बन गया है (अपने गुप्त रहस्य को दूसरों को बताने वाला, जासूसी करने वाला) उसकी स्थिति कुत्ते की तरह है।[14] शासकीय अत्याचारों को देखते हुए भी जिसकी वाणी अवरूद्ध हो। जो अंग्रजी भाषा का वमन करता हो–

'यो भारतीया स्वपि भव्य भाषा,
स्वाग्लांगिरं वान्तामिवाजिहीर्षुः
तं दुर्मतिं धिक सुमतिं प्रमान्याऽ
प्यन्याप्यधन्या वरिता न कन्या।'[15]

उपसंहार

इस प्रकार समाज में कन्या द्वारा घोषित वर के वरण–अवरण करने की उपयुर्क्त गुण–अवगुणों की कसौटी के माध्यम से श्री सुधाकर जी ने एक साथ पारिवारिक–सामाजिक–राष्ट्रीय एवं मानवीय समस्याओं को और उनके समाधान का उपाय प्रस्तुत किया है। जब तक समाज का युवावर्ग आत्मनिरीक्षण, आत्मविश्वास एवं आत्मसंयम के माध्यम से गुणावगुण का परीक्षण नहीं करेगा तब तक शायद ही किसी सामाजिक समस्या का समाधान हो सकेगा। समाज, सामाजिक जीवन के सन्दर्भ में युवा व्यक्तित्व, चरित्र के गुण–दोष के विषय में व्यथा–आक्रोश को उर्द्धत कर सकने में कवि सफल हो सके हैं।

संदर्भ

1. आर्यासुधाकरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 471
2. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 12ध्31
3. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 12ध्32
4. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 12ध्21
5. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 8ध्19
6. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्32
7. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्33
8. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्9
9. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्10
10. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्11
11. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्17
12. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्18
13. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्19
14. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्21
15. भारती स्वयंवरम् , पं सुधाकर शुक्ल – 10ध्22